International Journal of Creative Research Thoughts
Volume 1, Issue.8, August 2013 ISSN:-2320-2882

ORIGINAL ARTICLE

बघेलखण्ड के भगीरथ गीत

विमलेश कुमार ओझा
शोध छात्र,
अ.प्र.सिंह.वि.वि. रीवा (म.प्र.)

अजीत कुमार द्विवेदी
शोध छात्र,
अ.प्र.सिंह.वि.वि. रीवा (म.प्र.)

सारांश :–

चित्रकूट से आम्रकूट तक फैले विशाल भू–भाग को बघेलांचल के रूप में जाना जाता है। इस विस्तृत भू–भाग को प्रकृति ने अपने अभूतपूर्व सौंदर्य से नवाजा है। जीवन दायिनी नदियाँ प्रकृति की सुरम्य वादियों से कल–कल निनाद करते हुए लोक जीवन की खुशबू का प्रसाद बांटती गतिमान हैं। प्रकृति की गहवर उपत्यकाओं में लोकजीवन का आकंठ उल्लास है। इन्हीं गहवर उत्पत्यकाओं की घनी छांव में बघेली जन–जीवन पल्लवित–पुष्पित हुआ है। जहाँ एक ओर प्रकृति की अगाध सुरम्य लोकजीवन का श्रृंगार कर उसे खूबसूरत बनाती है वहीं लोकगीत, लोकजीवन को सरस बनाकर इसकी मौलिक अस्मिता को पहचान देते हैं। अनादिकाल से यहाँ के जीवन के साँसों के साक्षी, सुख–दुःख के सहचर, हर्ष–उल्लास के प्रतीक लोकगीत जीवन की गति के प्रमुख सम्बल रहे हैं। ये गीत जीवन के रग–रग में समाए हुए हैं साथ ही सोपान दर सोपान विकसित होती सभ्यता के अहम भागीदार हैं आज जब भूमंडलीकरण का दौर व्यापक रूप से अपना प्रभाव बनाए हुए है इन गीतों में हमारी अस्मिता और पहचान सुरक्षित है। ये गीत हमारी संवेदना को जागृत कर हमें मानव समाज के प्रति उत्तरदायी और संवेदनशील बनाते हैं। बघेलखण्ड की सभ्यता के विकास में इन लोकगीतों का भगीरथ प्रयास है। यहाँ के जन, जल, जंगल और जमीन के रग–रग में इनकी सोंधी खुशबू का साम्राज्य दिखाई पड़ता है।

प्रस्तावना :–

बघेलखण्ड के जन–जीवन की सांसों में बसे लोकगीत अनादिकाल से जीवन के सहचर के रूप में गतिमान हैं। हालांकि लोकगीतों की अहमन्यता और प्राप्ति देश देशान्तर में समान रूप से विद्यमान है। भावगत दृष्टि से इनका विस्तार लोकजगत के

Please cite this Article as : विमलेश कुमार ओझा,अजीत कुमार द्विवेदी, बघेलखण्ड के भगीरथ गीत,
:International Journal Of Creative Research Thoughts, Volume 1, Issue.8, August 2013

कोने–कोने से समान रूप से है। इनके विस्तार के सम्बन्ध में पं. भगवती प्रसाद शुक्ल ने कहा है –

''लोक साहित्य के अभिप्राय सर्वव्यापक होते हैं। वे अनेक जनपदों एवं देश देशांतर में समान रूप से मिलते हैं, इसलिये यह नहीं कहा जा सकता कि किस गीत का अभिप्राय मूलतः किस जनपद से है।''[1]

तब भी बघेली लोकगीतों की अपनी मूल विशेषताएँ हैं, जो इन्हें लोकमानचित्र पर विशेष स्थान देती हैं। हमारे जीवन के सभी क्षेत्रों में इनकी मधुर खनक सुनी जा सकती हैं। प्रकृति के सुरम्य उपादानों का सौन्दर्य इनमें छलकता है। धरती की सोंधी खुशबू, विंध्याटवी की अतुलनीय सौन्दर्य, नदियों के कल–कल की तान, प्रपातों की भीषण चिंघाड़, रात की दुधिया चाँदनी, अमराई की महक, ऋतुओं का श्रृंगार यहाँ के लोकगीतों के रूपबंध हैं। ये हमारी भावना व संवेदना के वाहक हैं। इनमें लोकजन की पीड़ा एवं प्रसन्नता, हर्ष–उल्लास, सहजता एवं सहृदयता की करूण धुन है। इनके विषय में गोमती प्रसाद 'विकल' जी ने कहा है –

''लोकगीत लोकमानस के उन्मुक्त राग हैं। लय, गति, ताल और रस से बंधित इस राग में समाज का मन प्राण गाता है। बेटियों का उल्लास एवं बहुओं का राग गाता है। माताओं की ममता और भाई–बहनों का अनुराग गाता है। अल्हड़ युवाओं की मस्ती और वृद्धों की झुकी कमर की पीड़ा गाता है। सृष्टि की चेतना और प्रेरणा गाती है।''[2]

यहाँ के जनजीवन में गीततत्व प्राणतत्व के रूप में रचा बसा है, जो जीवन के सभी पक्षों को उद्घाटित करता है। ये गीत विभिन्न रूपों में हमारे जीवन में प्रचलित हैं जिनसे मुख्यतः संस्कार के गीत, ऋतु गीत, वर्षा गीत, कजरी, हिन्डुरी, ढेढ़िया गीत, काग गीत, देवी गीत, बिरहा गीत आदि आते हैं, जिसमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण संस्कार गीत माने जाते हैं। ये इतने प्रभावशाली होते हैं कि कोई भी इन्हें सुनकर अभिभूत हो जायेगा। इनके रागालाप को सुनकर कौन सा हृदय झूम नहीं उठेगा। इनके धुन और राग की संजीवनी तो मृत में भी प्राण का संचार कर देती है। इनका प्रभाव वातावरण के प्रत्येक कण में थिरकन पैदा कर देता है। तभी तो विवाह के समय मण्डप में गाये जाने वाले इस गीत को सुनकर लोगों के रोम–रोम सिहर उठते हैं। यथा –

थारी रे काँपय गेंडुआ रे कांपय,
अरे काँपय कुशा केरी डार जी,

मंड़ये म काँपय अजबा कवन रामा
देत कुमारी क दान जी।।
कपिला कटोरी आजा मड़ये म दीन्हे,
अरे भरे भांदौं बहुला बिआई जी।
खाबै दुधवा आशीषबै मोरे आजा,
अरे बाढ़ै आजा वंश तुम्हार जी।।[3]

लोकगीतों की इसी रसज्ञता और प्रभावशीलता के कारण इनके विषय में पं. रामनरेश त्रिपाठी ने कहा है –

''ग्रामगीत एवं महाकवियों की कविता में अंतर है। ग्रामगीत में रस है, महाकाव्य में अलंकार। रस स्वाभाविक है और अलंकार मानव निर्मित।''[4]

लोकगीत हमारी इच्छा आकांक्षा की अभिव्यक्ति, रसास्वादन और मनोरंजन के साथ हमारी अत्यंत प्राचीन काल से चली आ रही रीति–रिवाज, परंपरा मान्यता आदि से संबंधित ज्ञान के कोष हैं। इनका अस्तित्व मानव के अस्तित्व के साथ ही माना गया है। इसी कारण इन्हें 'लोकवेद' कहा गया है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इन्हें कहा है–

''ग्रामगीत आर्येत्तर सभ्यता के वेद हैं।''[5] इन गीतों के माध्यम से जहाँ एक ओर हम परंपरा की जानकारी प्राप्त करते हैं वहीं दूसरी ओर ये हमे आधुनिकता की ओर उन्मुख करते हैं।

विवेचना :–

जिस प्रकार से संसार भर के लोक जीवन में ग्रामगीतों की भूमिका व प्रभाव है उसी प्रकार विंध्याटवी के जन–जीवन में भी इनका संचार है। इन गीतों में लोकहृदय का इतिहास व्याप्त हैं, और समझने की बात है कि कोई भी सभ्यता लोकजीवन के दौर से गुजर के ही आगे बढ़ी है। सभ्यता का दंभ रखने वाले एक बात यह भी समझ लें कि उनका जीवन नीरस व भावशून्य हो चुका है, जबकि लोकजीवन की सरसता पर कोई संदेह नहीं है। इनमें मानव हृदय का सहज व शुद्ध प्रतिबिंब झलकता है। ये गीत ग्राम जीवन को मृत्यु–पर्यन्त गीतमय बनाये रखते हैं। इसी क्रम में हम देख सकते हैं कि विंध्याटवी के गाँव–गाँव, गली–गली में लोग इन गीतों को गुनगुनाते हुए इनकी सरसता में आकंठ डूबे दिखाई पड़ जाएँगे। वास्तव में ये गीत तो जीवन को गति देने

का आधार हैं। इनका मानव जीवन के साथ सहचर भाव ही मानव को सभी कष्टों से लड़ने में समर्थ बनाता है। बघेलांचल के कुछ ऐसे गीत यहाँ देखे जा सकते हैं।

प्रसन्नता के समय किस प्रकार ये गीत हमारे सुख को और बढ़ाते हैं, इसका प्रमाण हमें जन्म के समय गाये जाने वाले इस गीत से मिलता है–

''जउने दिन राम जनम भयं, सोनमा के लुटि भई–रहो
आवा सोनमा के नाथ नथुनिया, कौशिल्या नाक सौहैहो।।[6]

लड़की की विदा में किस प्रकार पूरा माहौल गमगीन हो जाता है इसके लिये यह गीत देखा जा सकता है –

''अंतरे–खोंतरे माया रोवयं, बापा भरे दरबार होकि–2
अंगने ढ़ाढ़े भइया रोवयं, बेटी गईं विदेश होकि–2।।[7]

इन गीतों में संवेदना के शिखर का एहसास किया जा सकता है। इसी कारण ये अत्यंत प्राचीन होते हुए भी चिर नवीन बने हुये हैं। आज भी इनकी सरसता और रोचकता में समय की गति बाधा उपस्थित करने में असमर्थ ही साबित हुआ है।

उपसंहार :–

अन्ततः यह बात स्पष्ट रूप से कही जा सकती है कि हमारे जीवन के निर्माण व विकास में लोक संगीत की भूमिका को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। इनकी खुशबू हमारी सांसों में बसी है। इनका जुड़ाव हमारे संस्कार, संस्कृति और सभ्यता से है। ये मानव संस्कृति के अमर वरदान हैं, इसी कारण ये हमारे समाज के विकास और इसके कल्याण के भगीरथ हैं।

संदर्भ :–

1. पं. भगवती प्रसाद शुक्ल – बघेली भाषा और साहित्य– पृ. 165
2. गोमती प्रसाद 'विकल'–बघेली एवं संस्कृति और साहित्य पृ. 108
3. बघेली अंचल में प्रचलित विवाह गीत
4. पं. रामनरेश त्रिपाठी – ग्रामगीत पृ. 09
5. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी – संस्कृति और साहित्य– पृ. 39
6. बघेलखण्ड में प्रचलित सोहर का गीत
7. बघेलखण्ड में प्रचलित अंजुरी का गीत